डॉ. भीमराव अम्बेडकर शोधपीठ
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

एम.बी.एस मार्ग, कबीर सर्किल के पास, कोटा – 324005

(06/12/2017)

रिपोर्ट

कोटा विश्विद्यालय, कोटा में डॉ. भीमराव अम्बेडकर शोधपीठ के तत्वाधान में दिनांक 06/12/2017 को अम्बेडकर जी की 62वीं पुण्यतिथि के अवसर पर "डॉ. बी.आर. अम्बेडकर : एक बहुआयामी व्यक्तित्व" विषय पर परिचर्चा एवं श्रद्वांजलि का कार्यक्रम आयोजित किया गया। शोधपीठ की समन्वयक प्रो. रीना दाधीच ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि बाबा साहेब ने भारतीय समाज में समानता स्थापित करने के उद्वेश्य से कई कार्य किए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे भारतीय संविधान निर्माण समिति के समन्वयक थे। इसलिए उन्हें भारतीय संविधान का जनक कहा जाता हैं। यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजस्थान सरकार द्वारा 14 अप्रेल 2016 को माननीया मुख्यमंत्री जी द्वारा कोटा विश्वविद्यालय में अम्बेडकर शोधपीठ की स्थापना की घोषणा की गई। राज्य सरकार के पत्र द्वारा दिनांक 03/04/2017 को विधिवत् रूप से डॉ. अम्बेडकर शोधपीठ विश्वविद्यालय में स्थापित हुआ।

कोटा विश्वविद्यालय में अम्बेडकर शोधपीठ स्थापित करने का उद्देश्य बाबा साहेब के विचारों पर रूचिकर विद्यार्थियों द्वारा शोध करवाना हैं। शोध के मुख्य विषय दर्शन शास्त्र, राजनीति विज्ञान, लोक–प्रशासन, समाज शास्त्र, कानून विज्ञान, मनोविज्ञान, संवैधानिक अध्ययन, शिक्षा, समाज सुधार के कार्य, मानवाधिकार तथा अन्य कोई विषय जो कि राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक न्याय से सम्बद्व रखता हो, हो सकते हैं। शोधपीठ समय–समय पर अम्बेडकर जी के विचारों व कार्यो के प्रचार–प्रसार के लिए व्याख्यायानमालाओं, गोष्ठीयों, प्रतियोगिताओं तथा कार्यशालाओं का आयोजन करवाती है।

पीठ समाज के वंचित व पिछले समूह के लोगों को ऊँचा उठाने के लिए अन्य विश्वविद्यालय/संस्थानों/NGO (गैर सरकारी संगठनों) से सहयोग व समन्वय स्थापित कर कार्य करेगी। दिनांक 30/06/2017 को अम्बेडकर फाउन्डेशन, जयपुर तथा कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के मध्य अनुबन्ध हुआ जिसका मुख्य उद्देश्य निदेशक शोध, अम्बेडकर चेयर, जयपुर, अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र, कोटा विश्वविद्यालय एवं निदेशक शोध डॉ. बी. आर. अम्बेडकर फाउन्डेशन, जयपुर परस्पर समन्वय स्थापित कर भारत रत्न बाबा साहब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के विचार एवं अवधारणाओं का गहन अध्ययन एवं शोध करवाकर प्रचार प्रसार के माध्यम से आगे बढ़ाना है।

अम्बेडकर पीठ जयपुर द्वारा कोटा विश्वविद्यालय के शोध छात्रों को बाबा साहब अम्बेडकर से संबंधित विषयों पर शोध हेतु फेलोशिप (छात्रवृति) प्रदान की जाएगी।

अम्बेडकर पीठ, मूण्डला, जयपुर परिसर में एक उच्च स्तरीय पारम्परिक एवं डिजिटल पुस्तकालय की स्थापना की गई है। इसमें बाबा साहब से संबंधित सम्पूर्ण वाड़मय एवं पुस्तकें, अध्ययन सामग्री उपलब्ध है। इसका लाभ शोधार्थी प्राप्त कर सकेगें।

डॉ. ए.के. शर्मा जी, विधि विशेषज्ञ तथा वर्तमान में स्थायी लोक अदालत, कोटा जूरी के सदस्य ने कहा कि बाबा साहब सिर्फ दलित वर्ग के नेता के रूप में नहीं वरन् एक मानव जाति के संरक्षक के रूप में समाज में आगे आए। बाबा साहब ने वर्ण व्यवस्था की सीमा का विरोध किया। वे मानते थे कि मानव ने ही मानव का शोषण किया है व समाज का वर्गीकरण किया है, तथा इसके वे सख्त खिलाफ थे। जब ईश्वर ने ही मनुष्य को स्वतन्त्र पैदा किया है तो समाज क्यों उसे विभिन्न वर्गों में बाँधता है? उन्होनें कहा था कि यदि हम आज नहीं सँभलेगें, समाज में समानता तथा मानवीय गरिमा का ध्यान नहीं रखा जाएगा तो हमारा भविष्य संकट में आ जाएगा। डॉ. शर्मा ने कई व्यवहारिक उदाहरण देते हुए कहा कि हमें सामाजिक प्रजातंत्र पूर्ण रूप से अपनाना होगा तभी, सामाजिक असमानता मिट सकती है। अम्बेडकर जी का बहुआयामी व्यक्तित्व था वे कानूनविज्ञ, समाज–शास्त्री, समाज सुधारक होने के साथ–साथ निर्भीक नेता के रूप में राष्ट्र हित में अपने अंतिम समय तक कार्य करते रहे। डॉ. शर्मा ने अम्बेडकर जी के "Theory of Inclusive" की बात बताई।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. एन. एल. हेड़ा ने अम्बेडकर जी की जीवनी का संक्षिप्त परिचय दिया तथा "हिन्दू कोड बिल" सम्बन्धित ड्राफ्ट को रोकने पर अम्बेडकर जी द्वारा 1951 में कानून मंत्री के पद से इस्तीफा देने की चर्चा की। डॉ. श्वेता व्यास ने बाबा साहब द्वारा महिलाओं की शिक्षा के लिए किए गए कार्यो के बारे में बताया। उन्होनें कहा कि 25 दिसम्बर 1927 को चावदार तालाब के महाड़ सत्याग्रह में "मनुस्मृति–दहन" के ऐतिहासिक भाषण में अम्बेडकर जी ने हजारों दलित महिलाओं को संबोधित कर स्त्री–विरोधी कानून को न मानने का आह्वान किया था।

डॉ. जगदीश वर्मा ने चर्चा में भाग लेते हुए बताया कि बाबा साहेब ने वर्ष 1956 की अक्टूबर माह की 14 तारीख को नागपुर की पवित्र दीक्षा–भूमि में अपने लाखों अनुयायियों के साथ हिन्दू धर्म को त्यागकर, अपने पैतृक धर्म बौद्व धर्म को अंगीकार किया था।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक, पुस्तकालयअध्यक्ष, निदेशक शोध तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

कार्यक्रम सबको धन्यवाद के साथ समाप्त हुआ।